रात्रि क्लास 24-12-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

अज्ञान काल में भाई भाई होकर याद पड़ता है, चाचा चाचा होकर याद पड़ता है। यहां तुमको बाप टीचर टीचर सद्गुरु याद पड़ेगा। है एक ही। वही राजयोग सिखलाते हैं। यहां पहले मूल बात है पवित्र बनना है। बाप को याद करना है। फिर राज्य पद पावेंगे। तुम ही राजऋषि ऋषि पवित्र होते हैं। वही बाप टीचर है। यह ज्ञान बुधि में है वह सद्गुरु भी है? और दैवीगुण भी धारण करनी है, अगर आसुरी गुण होंगे, कोई पर क्रोध किया, तो सद्गुरु की निन्दा करावेंगे। हमको नई दुनिया में मर्तबा पाना है बहुत ऊंच पद है। ऐसा कर्म न करना चाहिए जिससे बाप की निन्दा हो। कोई क्रोध किया तो कहेंगे इनको भगवान पढ़ाते हैं फिर यह भूत क्यों। क्रोध का भूत है, देह-अहंकार भी भूत है। यह है ही आसुरी भूतों की दुनिया तुम बच्चों को दैवीगुण धारण करनी है। अपने ऊपर नजरदारी रखनी है। सावधान न होने से घाटा पड़ता है। बहुत मेहनत है। उल्टा कर्म करने से उतर पड़ेंगे। उतरना और चढ़ना इस समय बहुत है। मायाउतारती है, बाप चढ़ाते हैं। चढ़ने लिये दैवीगुण चाहिए। कोई से क्रोध नहीं करना है। निन्दा आदि नहीं करानी है। तब ऊंच पद पावेंगे। फर्क तो है ना। कर्म का भोग तो है ना। बाप ले जाते हैं स्वर्ग में। फिर भी कोई गरीब कोई साहुकार बनते हैं। कर्म जैसा करेंगे ऐसा पद पावेंगे। यहां कर्म पर बहुत खबरदारी रखनी है। तुम पार्टधारी हो ना। रावण राज्य में तुम्हारे कर्म विकर्म बनते हैं। अभी बिल्कुल तमोप्रधान हैं। सभी से कड़ा है विकार। दुनिया में अभी क्या लगा पड़ा है। बाप समझाते हैं आंखें बड़ी क्रिमनल हैं। अपने को आत्मा समझेंगे तो क्रिमनल दृष्टि नहीं जावेगी। भाई2 समझो। शरीर ही नहीं तो विकर्म कैसे होगा। मेहनत करनी है। दैवीगुण भी बहुत चाहिए। आत्माभिमानी बनो तब कर्मातीत अवस्था हो। और तुम ऊंच पद पा सकते हो। थोड़ा भी समझकर जाते हैं स्वर्ग में तो आवेंगे परन्तु इतना बोझा भी सिर पर है ना। इस पढ़ाई में बड़ी खबरदारी चाहिए। जास्ती पढ़ेंगे और पढ़ावेंगे तो जास्ती प्रजा बनेगी। सिर्फ कहा यह तो बहुत अच्छी नालेज है हम फिर आवेंगे। पैगाम मिला वह बेहद का बाप है उनको याद करना है इतना भी समझा तो भी स्वर्ग में आ जावेंगे। तुम सारे विश्व की बादशाही पाते हो सर्वशक्तिवान बाप से। रावण की शक्ति देखो कैसी है। कंगाल बना देती है। बच्चों को गुप्त मेहनत करनी है, तुम्हारा रहने का स्थान भी गुप्त दुनिया है, आत्मायें रहती हैं, तुम उस गुप्त दुनिया में जाने वाले हो। तो अ= अपने को आत्मा समझना और बाप को याद करना है? आत्मा ही धारण करती है, लेप-छेप आत्मा को लगती है ना। परमात्मा साथ योग रखो तो जंक उतरे। यह सभी ज्ञान की बातें समझने की है। बच्चों को सीखने भेजा जाता है तो पहले2 क्या सिखलाना है हमारा पारलौकिक बाप वह है। लौकिक बाप से वरसा मिलता है, पारलौकिक बाप से भी वरसा मिलता है बाकी अलौकिक बाप से वरसा नहीं मिलता है, वरसा है ही हद का और बेहद का। तो पुरुषार्थ भी ऐसा करना चाहिए। कोई बात समझ में न आवे तो पूछो। अपने को आत्मा समझ नालेज सुनाते रहो। बाप के रूहानी बच्चे हो तो सभी को रूहानी बातें ही सुनानी है, यह है स्प्रीचुअल नालेज। भाईयों से यही बातालाप करना है। स्थूल काम-काज में तो सभी स्थूल बातें ही चलती है। समझानी तुमको यहां दी जाती है तुम्हारी आत्मा पतित बनी है, उनको पावन बनाना है, यह पायन्टस है। पहले2 तो बताना है बाप दो है। एक हद का जिस्मानी बाप, एक है हम आत्माओं का परम पिता परमात्मा। उन से बेहद का वरसा मिलता है। सतोप्रधान में सुख जास्ती रहता है। सारा ज्ञान तुम्हारी बुधि में रहनी चाहिए। हम स्टुडन्ट है यह भूलना न चाहिए। भाईयों से हमेशा ज्ञान की बातें करो। बाप आकर बेसमझ को समझदार बनाते हैं। सारी दुनिया है बेसमझ। उनको समझदार बनाना पड़ता है, इसमें एक है मुख्य याद की यात्रा, तब ही सतोप्रधान बनेंगे। बाप ही आकर के सिखलाते हैं। मामेकं याद करो। जितनी ज्ञान की धारणा करेंगे तो सतोप्रधान बन फिर सतोप्रधान दुनिया की मालिक बनेंगे। वह पढ़ाई तुम्हारी फिर कल्प-कल्पान्तर चलेगी। कहा जावेगा कल्प2 ऐसा पुरुषार्थ करते हैं। अपने ऊपर नजरदारी चाहिए। जितना तुम एक होते जावेंगे उतना ही जास्ती सोझरा और अंधियारा कम हो ना

24-12-68

रहेगा। बाकी लड़ाई तो पिछाड़ी तक चलेगी। यह नालेज स्टुडेन्ट की बुधि मे रहनी चाहिए। जबतक ट्रन्सफर हो। पिछाड़ी मे तुम सा० भी करते रहेंगे। यह गुह्य2 बातें हैं। इस समय है तमोप्रधान दुनिया। नर्कवासी से स्वर्गवासी बाप को याद करने से बनेंगे। जितना याद करेंगे। सतयुग मे भी फिर जैसे2 समय गुजरता जाता है तो कलास्कम होती जाती है। जैसे मकान भी पुराना होता जाता है। तो जब तुम स्टुडेन्ट आपस मे मिलते हो तो यही बातें चलनी चाहिए। बाप याद है, वरसा याद है? तो खुशी होगी। तो बाप को इस प्रकार याद करना है टीचर रूप मे सदगुरु रूप मे याद करो। दैवीगुण धारण करो। सारी नालेज बुधि मे रहनी चाहिए। तुम समझते हो बाप राजयोग पढ़ा रहे हैं। हम पढ़कर मनुष्य से देवता बन जावेंगे। बाप मे ज्ञान है ही तुम्हारे पास भी ज्ञान रहना चाहिए पढ़ाना चाहिए। फिर नम्बरवार ग्रेड्स तो है ही। कुछ गफ्लत की तो फर्स्ट से सेकण्ड थर्ड ग्रेड मे कर देंगे। बाकी स्वर्ग मे जरूर आवेंगे। पद हल्का हो पड़ेगा। पिछाड़ी को मालूम पड़ेगा हमारी राजधानी कैसे स्थापन होती है। कौन ऊंच पद पा रहे हैं। जो अच्छा पढ़ते हैं उनका रिगार्ड भी रखना चाहिए। रिगार्ड जरूर रखना है। जैसा आफीसर ऐसा रिगार्ड। गाया जाता है सर्वगुण सम्पन्न ·· सभी गुण अपने मे धारण करनी है। फिर तुम नम्बरवार बहुत मीठे बन जावेंगे। ऐसे नहीं कोई चमाट लगावे तो तुम चुप रहो। परन्तु तुमको कोई चमाट लगावेंगे ही नहीं। क्योंकि तुम सुख देते हो ना। कोई से झगड़ा आदि कुछ करने की दरकार नहीं। एक बाप सभी को समझानी चाहिए तुम अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही संस्कार धारण करती है। पतित-पावन बेहद के बाप को याद करो तो तुम पावन बनेंगे। तुम पैगम्बर मैसेन्जर हो। सुखधाम शान्तिधाम का रास्ता बताने। तुम बच्चों को लिखते पढ़ते धंधा व्यवहार आदि करते यह अवस्था पक्का करना है। तुम कोई को भी झट बाप का परिचय दे सकते हो। बाप आते ही हैं नई दुनिया स्थापन करने। झट तुम कोई को भी घड़ी2 ज्ञान दे सकते हो। बहुत सहज है। मानते हो बाप पतित-पावन है। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। चलते2 तुम कोई को भी ज्ञान दे सकते हो। इतनी सहज है रेल मे भी बैठ समझाओ। यह बेहद का बाप है जो स्वर्ग का राज्य देते हैं। जिनकी तकदीर मे होगा वह जरूर आकर सुनने की कोशिश करेंगे। तो ऐसे सर्विस मे लगते जाओ तो खुशी भी होगी। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त मे यह है पतित फिर पुरुषार्थ करते2 पावन बन जावेंगे। अच्छा यह है रूहानी बहलन विलास। अच्छा रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 25-12-68:-

बाप कहीं दूर से आते हैं तो बच्चों के लिये कुछ न कुछ सौगात जरूर ले आते हैं। यह है बेहद का बाप। बच्चे जानते हैं बाबा विश्व की बादशाही देने आये हैं। बाप सौगात ले आते हैं बादशाही तो मिलनी है जरूर। फिर उनमें नम्बरवार पद है। कोई राजा कोई रंक बनते हैं। ऐसे नहीं नर्कवासी कोई दूसरे बनते हैं। वही स्वर्गवासी पूज्य फिर वही नर्कवासी पुजारी बनते हैं। यह 84 जन्म भी भारतवासी ही लेते हैं। बाकी जितना जो याद की यात्रा मे रहेंगे। बाप समझाते हैं तुम तमोप्रधान पतित बन गये हो ना। किसको सीधा कहो तो गुस्सा आ जाये। तुम्हारे बाप दादा परदादा ओ यह तो डिक्लेयर कर जाते हैं मरते हैं तो कहते हैं हम स्वर्ग मे जाते हैं। पहले नर्क मे थे। अभी तुम समझते हो हम सतयुगी सतोप्रधान थे। अभी कलियुग मे तमोप्रधान हैं। फिर सतोप्रधान बनते हैं। बाप कहते हैं तुम तमोप्रधान बन गये हो। अब तुम समझते हो अभी तमोप्रधान हैं। बराबर हम कंगाल हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते जाते हैं। झाड़ बुधि को पाता जाता है। यह है ज्ञान। वह है भक्ति। बाप आते ही हैं सदगति करने। जरूर उनकी दुर्गति होगी उनकी करेंगे ना। कोई को कहो भक्ति से दुर्गति को पाया है तो बिगड़ पड़े। नालेज समझाई जाती है। उनको कहा जाता है बखमल का मोचरा भी सीधा कहो नर्कवासी हो तो यह है लोहे का मोचरा। सभी बच्चों मे यह समझ नहीं है। कई तो

ऐसे हैं बात करने का भी ढंग नहीं हैं। टीचर्स की भी कालेज होती है ना। वह है हद की यह है बेहद की। तुम टीचर्स को टीचर पढ़ा रहे हैं। तुम सभी टीचर्स हो ना। टीचर्स में भी नम्बरवार होते हैं। दान-पुण्य आदि सभी यहां ही होती है। वहां तो नाम ही नहीं होता है दान पुण्य का। वहां की रस्म ही और। तो बच्चों को बाप और वरण झट याद आना चाहिए। एक ल0 ना0 में देखो कितनी ताकत है। सारे विश्व पर राज्य करते हैं। तुम बाप को याद करते करते कितने शक्तिवान बनते हैं। राजाओं को प्रजा हमेशा अन्नदाता कहते हैं। समझते हैं इनके कारण ही हमको मिलता है। है भी ऐसे। इन्होंने भी बाप से वरसा लिया है। ताकत कितनी रहती है। रशिया का जार आता था लश्कर लेकर तो मनुष्य बड़ा डरते थे। ताकत रहती है ना। अभी तुम ताकत लेते हो। सभी एक को रिगार्ड देंगे। कमान्डर आदि के कितनी बड़ी अच्छे आर्मी सेना होते हैं। कितना रिगार्ड रहता है। यहां है जिस्मानी शक्ति वहां है रूहानी शक्ति। सारी ताकत एक राजा रानी में रहती है। यहां तो बहुत है ना। अभी तुम बच्चों को समझ पड़ी है। देवी देवताओं का कितना रिगार्ड रखते हैं। कितनी पूजा होती है। इतनी ताकत कहां से मिली? बाप से। परन्तु माया है ना। इतना विचार कोई का चलता ही नहीं। अभी तुम देखो बाप से क्या लेते हो। बाप नई दुनिया ही रचते हैं। पुरानी दुनिया की स्थापना कब होती ही नहीं। बाप नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं सो तुम जानते हो। दुनिया जरा भी नहीं जानती। तुम भी इस जन्म में सीखे हो। वह हठकरेंगे लड़ेंगे झगड़ेंगे। विघ्न पड़ेंगे। बांधेलियां कितना पुकारती हैं। स्वर्ग में कितना पवित्रता है। कहते हैं बच्चे नहीं होंगे। अरे वहां तो विकार की बात ही नहीं। बेमब==== योगबल से विश्व की बादशाही ले सकते हैं तो बच्चा क्यों नहीं पैदा करेंगे। बाप से योगबल प्राप्त करते हैं। जो फिर 2। जन्मों तक चलता है। फिर आस्ते2 कम होता जाता है। फिर भोगी बनते हैं। सन्यासी तो प्रकृति मार्ग को जानते ही नहीं। तो वह राजयोग कैसे सिखावेंगे। यह नालेज अच्छी रीत धारण करनी है। समझाना सिखना पड़े। बाप बाप भी है टीचर भी है टीचर न बनेंगे तो पद कम हो जावेगा। कुछ न कुछ सिखना है। नेपाल में छोटे बच्चे को भी शिकार करना सिखलाते हैं। बतक या कुछ न कुछ मारना जरूर है। पाड़ों को भी मारते हैं। फिर उनका महाप्रसाद समझते हैं। यह सभी ड्रामा में नूंध है। तीर कोई को दे नहीं सकते। समझाना होता है ड्रामा कैसे चलता है। तुम जानते हो यह अनादि अविनाशी ड्रामा बना हुआ है। यह फिर भी हू बहू जरूर रिपीट होगा।

तुम बच्चों की बुद्धि में कितनी बड़ी दुनिया है। क्या करा कैसे फैल मोटरें हैं। एक कार 15 लाख रुपये का है। स्टील की ऐसी बनाई है जो गोली अन्दर जा न सके। अपनी बचाव के लिये कैसे बनाते हैं। हां तो ऐसी कोई बात ही नहीं होती। तुम बहुत निडर रहते हो। यहां तो काल का कितना डर है। कितना रोते हैं। तुम सभी बातों से छूट जाते हो। गाया जाता है बाप बच्चों के लिये तीरी पर बहिश्त लाते हैं। हम स्वर्ग में जरूर आवेंगे। वही बाप फिर तुमको टीचर बन पढ़ाते भी हैं। ऐसे बाप गुरु टीचर को तो निरन्तर याद करना चाहिए ना। उस एक को ही आलमाईटी कहा जाता है। बाप आलमाईटी सतोप्रधान बनाते हैं। माया भी आलमाईटी थी सभी को तमोप्रधान बना दिया है टीचर में भी नम्बरवार महारथी घोड़ेसवार प्यादे। प्रजा में भी ऐसे नम्बरवार होते हैं। महारथी घोड़े सवार प्यादे।

कोई को समझाने की भी बड़ी युक्ति चाहिए। बाप ने समझाया है विघ्न भी पड़ेंगे। सारा बच्चों की गफलत से होती है। तुम बच्चों को सामना नहीं करना है। शान्त में रहना है। बाप शान्ति का सागर है तो तुमको भी ऐसा बनना है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड नाईट और रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।